राजपूत

सैक्टर मिलेट्री रैस्ट हाऊस में ठहरने के लिये अच्छी जगह है। इसमें दूसरे होटलों जैसा हंगामा या बेगानगी नहीं है। चार साल पहले में सैक्टर जब सर्वे के लिये आया था तो यहीं ठहरा था और फिर यहाँ का माहौल मुझे बहुत पसन्द आया था। यहाँ के इन्चार्ज थे हवलदार मदन सिंह - जब मेरी जीप रैस्ट हाऊस के कैम्पस में दाखिल हुई थी तो वह भी लॉन में बैठे थे। उन्होंने खड़े होकर मुझे एक सैलूट रसीद किया था। और एक स्वैलीन भला कहाँ सैल्यूट वगैरह का आदी, घबरा कर मैं भी उन्हें एक सैल्यूट मारने वाला था लेकिन बहरहाल मैंने अपनी घबराहट को चेक कर लिया था और अपनी गर्दन को हल्का सा खम देकर उनके सैलूट का जवाब दिया था।

क्या ठहरेंगे सर! हवलदार जी ने पूछा था। मैंने असबात में गर्दन हिलाई थी। हवलदार जी ने वहीं से किसी मंगल सिंह को आवाज़ लगायी थी। वह कोई रीटायर्ड फ़ौजी था। साहब के लिये चार नम्बर कमरा खोल दो। वह सिपाही मेरा सामान लेकर वहाँ से चल दिया था। अब मुझे रजिस्टर में Entry करना थी जिसमें नाम के कॉलम के साथ-साथ रैन्क नं: कम्पनी वगैरह की भी Entry करना थी। बहरहाल मैंने नाम के खाने में ज़रूर अपना नाम लिख दिया था। स्वैलीन हवलदार जी ने मुझे हल्का सा घूरा था। मेरे बाल छोटे और मूंछें ज़रा बड़ी थीं इस लिये हवलदार जी मुझे मिलेट्री का कोई ऑफ़िसर समझे थे। मैंने सुना था कि अगर जगह हो तो यहाँ स्वैलीन भी ठहर सकते हैं। लेकिन हवलदार जी किसी सोच में गुम हो गये थे। शायद उन्होंने मुझ पर जो अपना सैलूट ज़ाया किया था। उसकी क्या जवाबी कारवाई हो उस पर सोच विचार कर रहे हों उन्होंने रजिस्टर को फिर ग़ौर से देखा। अच्छा डाक्टर हाँ-हाँ साहब बिल्कुल ठहर सकते हैं। आप इत्मिनान से रहिये।

दूसरे दिन सुबह हवलदार जी मेरे कमरे में आ धमके। सर चाय नाश्ते के लिये कह दिया चाय वगैरह पास ही के कैन्टीन से आयी थी। मैंने हवलदार जी को कुर्सी पेश की थी जिस पर वह बैठ गये थे और

और बातों का सिलसिला शुरू हो गया था। पता चला कि वह 1965 वाली जंग लड़ चुके हैं। फिर उन्होंने अपनी क़मीस उतार दी। दायें तरफ़ सीने में गोली का निशान साफ़ नज़र आ रहा था। छः महीने अस्पताल में रहना पड़ा, काफ़ी भारी आपरेशन हुआ था। वह तो भगवान ने बचा लिया। आप तो डाक्टर हैं कुछ बताइये। इतने साल हो गये लेकिन फिर भी इसमें अक्सर दर्द रहता है। अरे भाई मैं इन्जीनियर हूँ। यहाँ सर्वे करने आया हूँ फिर मैंने इन्जक्शन वाले डाक्टर और किताब वाले डाक्टर का फ़र्क़ समझाया था।

हवलदार के चेहरे पर फैली मुस्कुराहट गायब चुकी थी। मैंने सोचा इन दोनों में मैंने उन्हें यह दूसरा झटका दिया था। हवलदार जी ने दिल ही दिल में किताब वाले डाक्टरों को ज़रूर सलावातें सुनाई होंगी। अच्छा चलते हैं हवलदार जी एक झटके से खड़े हो गये थे।

हवलदार जी एक चीज़ देख कर बहुत खुशी हुई। जी क्या? उनके चेहरे पर बना हुआ तनाव बरक़रार था। मुझे यह देख कर खुशी हुई कि आप ने कहीं और नहीं अपने सीने पर गोली खायी। यह सुनना था कि हवलदार जी के सारे दाँत खुशी से निकल पड़े। चेहरा गुले गुलज़ार हो गया और वह धम से दोबारह कुर्सी पर बैठ गये। सर ऐसा है। (हवलदार जी ने मेरा सर का ख़िताब वापस कर दिया था) कि जब से सीने पर गोली खाकर गाँव लौटा था। गाँव में डाकू आना बन्द हो गये। अब हवलदार जी ने अपनी बहादुरी के क़िस्से सुनाना शुरू कर दिये थे। मैं उनके क़िस्से सुनता जा रहा था और हसब ज़रूरत इस पर Mathematics का इस्तेमाल करता जा रहा था। बहरहाल इस दिन के बाद मेरा मामूल हो गया जब भी सेक्टर आता मिलेट्री रेस्ट हाऊस में ही ठहरता था।

अब की तक़रीबन दो साल बाद सेक्टर आना हुआ था। हवलदार जी ने मेरा ऐसा ही इस्तक़बाल किया जैसे अपने किसी क़रीबी अज़ीज़ से काफ़ी अरसे बाद मिल रहे हों। सर्वे का काम शुरू हो गया था। दिन भर की मसरूफ़यत के बाद शाम को थोड़ी देर हवलदार जी के साथ गप शप का भी प्रोग्राम बनता था।

एक दिन वह अपने साथ एक दुबले पतले देहाती को लेकर आ गये। जो शक्ल से बिल्कुल गँवार नज़र आ रहा था। मैली कुचैली बनियाइन और धोती पहने हुये था। सर आप सर्वे पर जाते हैं। इसको काम पर लगा लीजिये, यह बहुत ग़रीब आदमी है। क्या नाम है तुम्हारा मैंने उस आदमी से पूछा। उसकी ज़बान लड़खड़ा रही थी। या फिर वह बहुत ज़्यादा घबराया हुआ था। मोहन नाम है उसका हवलदार ने बताया। राजपूत हूतड़ जी। वह फिर काँपते बोला मैंने सोचा कैसा राजपूत है। राजपूत के नाम पर तो मेरे ज़ेहन में राना प्रताप जैसे बहादुरों की शबीह उभरने लगती थी। हवलदार जी ने रैस्ट हाऊस ही में इसके रहने का बन्दोबस्त कर दिया था। बाहर Guest House में चौकीदार के साथ।

अब मोहन सिंह बाक़ायदा मेरे साथ जीप में बैठ कर Site आता था। वैसा ही घबराया सा डरा सा नज़र आता था। मैंने सोचा इसमें कोई बात भी राजपूतों की नहीं आयी।

क्योंकि रैस्ट हाऊस में खाने का कोई इन्तिज़ाम नहीं था इसलिये खाना बाहर दूसरे होटलों में खाना पड़ता था। और मोहन सिंह क्योंकि बाक़ायदा मुलाज़िम हो गये थे इसलिये खाना वग़ैरह वह साथ में खाते थे। ज़ाहिर है वही खाते थे जो मैं खाता था। नतीजा यह हुआ कि मोहन सिंह के गाल की हड्डियों पर गोश्त चढ़ना शुरू हो गया। उनकी घबराहट और कपकपाहट भी ख़त्म होने लगी। और उसका सर भी तेल से चुपड़ा नज़र आने लगा। मेरी पुरानी पैन्ट शर्ट पर वह पहले से क़ब्ज़ा जमाए हुये था। बहरहाल अब वह पहले वाला गँवार हरगिज़ नज़र नहीं आता था। अब क्योंकि बोलने में घबराता नहीं था तो उसकी बात भी समझ में आने लगी थी। पता चला कि झुन्झुनू शहर के किसी गाँव का रहने वाला है। उसके कुएँ का पानी सूख गया था। खेती बन्द हो गयी थी इस लिये वह गाँव छोड़ कर पिछले चार साल से इधर उधर भटक रहा है। कभी मज़दूरी मिल जाती है। कभी किसी ढाबे में काम मिल जाता और अक्सर बीमार भी रहता। इधर काफ़ी दिनों से इसे काम नहीं मिला था तो अक्सर इसे फ़ाक़े भी करने पड़े। बीवी बच्चे उसके गाँव में रहते हैं और वह दो साल से गाँव वापस नहीं जा पाया था।

एक दिन होटल में ज़्यादा ही भीड़ थी। मोहन सिंह जो खुद ही अलग मेज़ पर बैठ जाया करता था। दूसरी ख़ाली मेज़ न पाकर पसोपेंच में पड़ गया। फिर उसने खाना साथ में बैठ कर खाया था और बेख़याली में बीड़ी सुलगा कर धुआँ मेरे मुँह पर दे मारा था और फिर मैं खाँसी के दौरान उसे डाँट भी नहीं पाया था।

एक दिन मोहन सिंह शाम को मेरे कमरे में दाख़िल हुआ तो मुझे शराब की हल्की सी बदबू का एहसास हुआ। दूसरे दिन हवलदार जी ने मुझसे आकर शिकायत की कि इधर वह शराब के ठेके पर कई बार देखा गया।

आज जब मोहन सिंह मेरा बिस्तर वग़ैरह ठीक करके जाने लगा तो फिर उस पुराने अन्दाज़ में हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। क्या बात है मैंने पूछा पता चला कि उसे दो सौ रुपये चाहिये बीवी बच्चों के कपड़े ख़रीदने हैं। मैंने उसको दो सौ रुपये पकड़ा दिये थे।

रात कुछ अजीब से शोर से मेरी आँख खुल गई। मैंने घड़ी पर नज़र डाली रात के 2 बज रहे थे। क्या मामला है मैंने सोचा। तब ही मेरे कमरे दरवाज़ा पीटा जाने लगा। मैंने उठकर दरवाज़ा खोल दिया। मिलेट्री का एक सिपाही सामने खड़ा था। साहब ज़रा चलिये आप को हवलदार जी बुला रहे हैं। क्या मामला है? मैंने सोचा फिर सिपाही के पीछे चल दिया। हाल में दाख़िल हुआ तो देखा मोहन सिंह कुर्सी पर रस्सियों से जकड़े बैठे हुये हैं। हवलदार जी तैश में खड़े हैं और शायद उसकी पिटाई भी कर रहे थे। मुझे देख कर हवलदार जी ने उसे एक ज़ोर दार थप्पड़ और रसीद कर दिया। सर रात में उसने पूरी बोतल ही पी डाली। अंग्रेज़ी शराब ले आया 150 रुपया की बोतल आती है मैंने ख़ाली बोतल पर नज़र डाली जो वहीं नीचे ज़मीन पर पड़ी हुई थी। मुझे हवलदार जी पर बड़ा ग़ुस्सा आया कि यह कौन सी ऐसी बात थी जिस पर दो बजे रात को इतना हंगामा खड़ा कर दिया और मेरी नींद भी ख़राब की तब ही हाल में मेजर र दाख़िल हुआ जो कुछ दिन पहले रैस्ट हाउस में ठहरने आया था। मेजर बोतल थामे हुये था। मैं इसको नहीं छोड़ूंगा। अभी इस शूट करूंगा। मेजर और मोहन सिंह के बीच में आते हुये पूछा। आप मामला पूछना है मेरा वाइफ़ को रहा है। यह शराब पीकर उसके बेड में

में घुसने की कोशिश कर रहा था। मेजर के पीछे उसकी बीवी भी खड़ी थी। गुस्से से कॉंप रही थी। मेरे बहुत समझाने से मेजर का गुस्सा कम हुआ और मोहन सिंह भी शूट होने से बच गये।

साहब उस पुलिस के हवाले कर दिया जाये। हवलदार जी ने मशवरह दिया। हवलदार तुम्हारा अक्ल चरने गया है। तुम चाहता मेरा वाइफ़ कोर्ट में जाये। इसको दस जूते गिन कर और मारो और यहाँ से निकाल दो। मोहन सिंह को दस जूते लगाये गये थे जिसमें दो तीन जूतियाँ मेजर की वाइफ़ की तरफ़ से भी थीं।

मोहन सिंह के चेहरे पर कोई शरमिंदिगी के निशान नहीं थे हर जूते को उन्होंने ऐसे लिया जैसे कि उन्हें उनकी इसी हरकत पर दाद दी जा रही हो। वह रातों रात रैस्ट हाऊस से निकाल दिये गये थे।

•••

(नोट : बाक़िया अफ़साने दूसरे रजिस्टर पर)